आज भौतिकता ने मनुष्य को अंधा बना दिया है। प्रकृति व भौतिक परिस्थितियां खतरे की लगातार घंटी बजा रही है पर अंधा और बहरा होने के कारण मानव उसे सुना-अनसुना कर रहा है। शायद अब मानव-सभ्यता के विनाश का खतरा दबे स्वर से स्वीकार किया जा रहा है। पर ज्ञान न होने के कारण जो भी कदम उठाये जा रहे हैं वह और ही खतरनाक साबित होते जा रहे हैं। ''विनाश काले विपरीत बुद्धि'' का जो गायन है, स्पष्ट चरितार्थ हो रहा है। विचार करें, सृष्टि परिवर्तन का समय तो नहीं आ गया ?

प्राकृतिक परिवर्तन - आज प्रकृति भी भयावह स्थिति में पहुंच गयी है। वैज्ञानिकों के कथन अनुसार हमारी पृथ्वी इस समय 'ग्रीन हाउस' में आ गयी है अर्थात् कार्बन डाईऑक्साईड व अन्य गैसों की अधिकता के कारण विश्व का औसत ताप बढ़ रहा है। वैज्ञानिकों के अनुसार कुछ वर्षों में यह ताप 1 डिग्री सेंटीग्रेड से 4 डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ सकता है। ध्रुवों का ताप तो इस औसत ताप का 4 से 7 गुना बढ़ जाता है। ऐसी परिस्थिति में ध्रुवों की बर्फ पिघलकर विनाशकारी प्रलय पैदा कर सकती है।

पृथ्वी के चारों ओर ओजोन का रक्षा कवच तेजी से नष्ट हो रहा है जिसके कारण सूर्य से आने वाली घातक पराबैंगनी किरणें कैंसर व अन्य असाध्य बीमारियों द्वारा भीषण प्रकोप फैला सकती हैं जिसके उत्तरोत्तर बढ़ते हुए प्रभाव से सहज अनुमान लगाया जा सकता है। भूमिगत जल भी प्रदूषित होता जा रहा है। उर्वरकों व कीटनाशकों का खाद्य पदार्थों व अनाजों पर स्पष्ट कुप्रभाव देखा जा रहा है। प्रदूषण इस हद तक बढ़ गया है कि माँ का दूध भी प्रदूषण से मुक्त नहीं रहा।

असाध्य बीमारियां - आज कैंसर, एड्स व अन्य कई जानलेवा बीमारियां मानव के सामने एक चैलेंज है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी की उन्नति के साथ बढ़ रहे प्रदूषण के कारण मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में निरंतर कमी आती जा रही है। अभी बच्चों में बुढ़ापा ला देने वाले प्रोजोरिया नामक असाध्य रोग का पता चला है। अफ्रीका में 10 प्रतिशत नवजात शिशुओं में एड्स के विषाणु पाये गये हैं। वैज्ञानिकों ने तो यहां तक कह दिया है कि यदि ऐसा ही रहा तो मानव रेस ही समाप्त हो जायेगी।

विज्ञान तब और अब :- आज भली भांति स्पष्ट हो चुका है कि कुछ

आ गयी सृष्टि परिवर्तन की बेला

-ब्र.कु.गंगाधर

हजार वर्ष पूर्व आज से भी विकसित विज्ञान मौजूद था। मिस्र का पिरामिड जिसके एक भी पत्थर को उठाने वाली आज भी कोई क्रेन मौजूद नहीं है। जर्मन में कोयले की खान से प्राप्त स्टील का क्यूब, बगदादा में हजारों वर्ष पुरानी विद्युत घंटी आदि नाना प्रकार के साक्ष्य स्पष्ट करते हैं कि इसके पूर्व भी विज्ञान चरमसीमा पर था। चिली, यूनान और ब्राजील के त्रिकोण पर मिली मानव निर्मित गुफा जो कि एक विशाल सभाकक्ष लगता है जिसमें बैठक व्यवस्था, हवा के जाने-आने की व्यवस्था है। उसमें प्राप्त सोने के कागजों पर लिखी गयी किताब जिसमें अक्षर खुदे हुए हैं। वहां से प्राप्त प्लास्टिक की विशाल मेज व सोने का पिरामिड आदि कुल मिलाकर भारतीय शास्त्रों में वर्णित विमानों आदि की बातों की सत्यता की गारंटी करते हैं।

वास्तव में अभी विज्ञान अत्यधिक उन्नति करेगा। पुष्पक विमान जैसे विमान बनेंगे जो अटामिक ऊर्जा से भी अत्यधिक वेग से चलेंगे। पर इसी बीच होगा सृष्टि में विनाशकारी परिवर्तन। फलस्वरूप सतोप्रधान आत्माएं धरा पर आएंगी और अन्य तमोगुणी आत्माएं परमधाम में विश्राम करेंगी। इन्हीं सतोगुणी आत्माओं को देवता कहा जाता है। कहते भी हैं सतयुग में देवताएं निवास करते हैं। कहा भी जाता है कि ईसा से 3000 वर्ष पूर्व भारत पैराडाईज अर्थात् स्वर्ग था।

महाभारत काल की पुनरावृत्ति :- आज हम देखते हैं कि मनुष्यों में नैतिकता क्षीण होती जा रही है। समस्त मानव जाति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि दुर्गुणों के वशीभूत होकर अपने स्वार्थ सिद्धि में लगा हुआ है। इंद्रिय सुख भोगने की प्रबल इच्छा के कारण शारीरिक, मानसिक व सामाजिक दु:ख व कष्ट से ग्रसित हो रही है। क्या इससे भी अधिक पतन बाकी है ? लगता है महाभारत काल की पुनरावृत्ति हो रही है। एक तरफ है कौरव अर्थात् शाश्वत् नियमों के विरुद्ध आचरण करने वाले, दूसरी तरफ हैं धर्म सम्मत गीता के अनुसार अपने जीवन को ढालने वाले पाण्डव और तीसरी ओर हैं यादव अर्थात् आधुनिक परमाणु अस्त्र, अणु-शस्त्र, स्टारवार, रासायनिक शस्त्रों के मद में चूर रहने वाले।

..शेष पृष्ठ 4 पर

सच्चाई और प्रेम से प्राप्त होता है ईश्वर का आशीर्वाद

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

जो ज्ञान के राज को नहीं जानता है वो नाराज हो जाता है। बाबा ने हमें होमवर्क ऐसा दिया है, जो बाबा की हमसे आशायें हैं उसे दो महीने में पूरा करना है। यह उमंग-उत्साह किसमें होगा ! जिसको बाबा की आशीर्वाद होगी। उससे अनेक काम सहज हो रहे हैं। कभी यह शब्द नहीं निकल सकता है कि कैसे काम होगा। हिम्मते बच्चे मदद बाप से बंधनमुक्त हो जाते हैं। अगर हमारे पास धन नहीं है, तन भी ठीक नहीं है, पढ़े-लिखे भी नहीं हैं, तो बाबा कहेगा बच्चे कोई बात नहीं, उमंग-उत्साह तो हैं ना ! बाबा काम खुद करता है और नाम बच्चे का लेता है। जब से बाबा ने बोला तब से हमेशा याद रहता है कि हो जायेगा। कैसे होगा ! कभी यह नहीं कहो। न मैं, न मेरा। मैं का अभिमान, मेरे में ममता-मोह, बाबा का अच्छा बच्चा बनने नहीं देगा। पर अपने लिए अंदर से भावना हो कि मैं बाबा का अच्छा बच्चा बनूं। मम्मा जैसा, दादी जैसा बनना है। ख्याल करेंगे तो बाबा बना देगा।

हमारे अंदर व्यर्थ संकल्प भी न आवें। व्यर्थ संकल्प कितना टाइम वेस्ट करते हैं - कभी ख्याल किया है ! वह फिर समर्थ संकल्प आने नहीं देते हैं इसलिए संकल्प, वाणी और कर्म। कर्म के बिगर रह भी नहीं सकते। अच्छे कर्म करते रहेंगे तो अच्छे मजबूत बन जायेंगे, इसमें बाबा का आशीर्वाद और हमारा उमंग-उत्साह दस गुना काम करा देता है। आशीर्वाद की गहराई में जाओ, सूक्ष्म में और कोई डाउट नहीं है तो आशीर्वाद मिलेगी। इतने सब काम बाबा आपेही निमित्त बने हुए से करा लेता है। जो निमित्त बने हुए हैं, उनसे पूछो तो यही कहेंगे बाबा की आशीर्वाद है, मैंने नहीं किया। उनको आशीर्वाद दी मुझे नहीं दी - यह क्वेश्चन नहीं करो। लायक बनो माना वो योग्यतायें हमारे में आयें जो आशीर्वाद मिले।

तुम्हारे में अगर लव है तो तुम्हारी वैल्यू बढ़ जायेगी। अगर देने वाले दाता बनने की भावना है तो वैल्यू बढ़ जायेगी। मांगने के बजाए देते जाओ। इसके लिए मुख से तीन चाहिए शब्द नहीं निकलने चाहिए। एक तो संसार में यह चाहिए, यह चाहिए। दूसरा, मैं बहुत नहीं मांगती हूँ लेकिन मान तो चाहिए। जब तक चाहिए शब्द मुख से या मन से निकलता है तब तक बाबा से जो मिल रहा है वो नहीं ले रही हूँ, और-और मांग रही हूँ। चाहिए शब्द लेने से रोक रहा है। तीसरा चाहिए, इसको यह नहीं करना चाहिए, उसको यह नहीं करना चाहिए।

तो उमंग-उत्साह, सच्चाई और प्रेम से व्यवहार कराता है। सच्चाई और प्रेम का व्यवहार है तो आशीर्वाद का भण्डारा भरपूर है। आशीर्वाद बाबा देगा, मैं शुभ-भावना देंगी कि बाबा ने जो इतना अच्छा पढ़ाया है, आप भी यह अच्छी पढ़ाई पढ़ो। मुरली प्यार से पढ़ो, माना जिससे प्यार होता है उससे जुदा हो नहीं सकते। जहां मुरली और बाबा है वहीं मेरा मधुबन है। बाबा से आशीर्वाद लेने के योग्य बनना यह मेरा काम है। रियलाइज करो कि चाहिए में कितना नुकसान है। किसी की कम्पलेन नहीं करो, फिर कहेंगे कम्पलेन नहीं करती हूँ लेकिन जो बात है, जो देखा है वो सुनाती हूँ। ऐसी स्थिति बनाओ जो आपकी स्थिति देख उसे भी कम्पलीट बनने की धुन लग जाये। अंदर का आवाज भावना वाला हो, तो भावना पहुंचती है। कईयों के कर्म प्रजेन्ट समय ऐसे हैं जो आशीर्वाद जो मिली हुई भी पता नहीं कहां चली जाती है। परचिंतन में कोई बात अंदर ले ली या अपने में विश्वास कम हो गया। अगर एक भी भूल हो गई तो फौरन अपने आपको क्षमा करो। चलो भूल हो गई, मैं महसूस करूं यह नहीं होनी चाहिए। ●

समझ से कार्य करने पर सफलता मिलती है

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

हम ज्ञान की जो भी बातें सुनते हैं वह एक-एक बात हमारे अंदर धारण होती जाए। धारण होना माना स्वरूप में लाना। हम आत्मा के गुणों का जब वर्णन करते हैं तो कहते हैं आनन्द स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शक्ति स्वरूप... सबमें स्वरूप शब्द आता है। बाबा तो सागर है लेकिन आत्मा इन गुणों का स्वरूप है। तो सुनना बहुत सहज है, वह तो द्वापर से लेके बहुत ही कथायें सुनते आये हैं, सुनने की तो आदत पक्की हो गई है। लेकिन अभी बाबा ने एडीशन किया कि सुनना अर्थात् बनना।

ज्ञान और भक्ति में यही अंतर है वहां सुनते रहते हैं लेकिन देवता समान बनते नहीं हैं, देवता देवता ही रहता है, भगत भगत ही रहता है लेकिन यहां बाबा हमको कहता है कि आपको बाप समान बनना है। यह कितनी बड़ी बात है। तो हम अपने आपको देखें कि सचमुच हमने जितने वर्ष सुना है, जो बातें सुनी हैं वह स्वरूप में आई हैं कि सिर्फ सुनने और सुनाने तक हैं ? क्योंकि सुनाने के बिना भी हम रह नहीं सकते हैं, नैचुरल है जो मिला है वह दूसरे को देने की दिल होती ही है। और कहां ना कहां सुनाते ही रहते हैं लेकिन स्वरूप कहां तक बने हैं ?

जैसे हम कहते ज्ञान स्वरूप - तो स्वरूप में ज्ञान आया है ? ज्ञान का अर्थ क्या है ? समझ और समझ होने के कारण जो काम किया जाता है उसमें सफलता मिलती है और बेसमझी से काम करो तो सफलता नहीं होती है। तो ज्ञान स्वरूप हम कहां तक बने हैं ? स्वरूप का अर्थ क्या है ? मानो यह आँखें देखने का काम करती हैं, मुख बोलने का काम करता है, कान सुनने का काम करते हैं, हरेक कर्मेन्द्रिय अपना-अपना कर्म करती ही है लेकिन जो भी हम शब्द बोलते हैं, वह ज्ञान स्वरूप होकर देखते हैं। ज्ञान कहता है भाई-भाई की दृष्टि से देखो या आत्मा की दृष्टि से देखो। अगर हम आत्मिक दृष्टि से एक दो को देखते हैं माना मेरे नयन ज्ञान स्वरूप बनें हैं। अगर हम बॉडी कॉन्सेस रूप से देखते हैं तो हमारे नयन उस समय ज्ञान स्वरूप नहीं हैं। ऐसे ही प्रेम स्वरूप कहां तक बने हैं ? मानो किसी के साथ कुछ नीचे ऊपर चल रहा है, तो कभी जोश में तो नहीं आते ! उस समय मेरे नयन, मेरा मुख प्रेम स्वरूप यानि ज्ञान स्वरूप है। मैं उससे प्रेम की दृष्टि से बोल रही हूँ या क्रोध के रूप में बोल रही हूँ ? तो स्वरूप तो हमारा क्रोध का हुआ ना ! प्रेम स्वरूप कैसे हुआ ! अगर प्रेम स्वरूप हम होते तो हम प्रेम से देखते, ओम् शांति कहते। तो यह चेक करना चाहिए कि जो आत्मा के मौलिक गुण हैं वा जो बाबा ने हमको शिक्षायें दी हैं - उस अनुसार मैंने ज्ञान को स्वरूप में कहां तक लाया है ? अगर मानो मैं कहती हूँ कि मैं तो बाबा के श्रीमत पर चलती हूँ, तो श्रीमत कहती है हर गुण को, ज्ञान को स्वरूप में लाओ। श्रीमत ऐसा नहीं कहती कि भले कभी-कभी क्रोध करो। मैं समझती हूँ क्रोध करने का अनुभव तो सभी को होगा, चाहे थोड़ा कम करे, चाहे कोई तेज करे लेकिन क्रोध करने का अनुभव सभी को है। ऐसा कोई है जिसने कभी जीवन में क्रोध किया ही नहीं हो ? कई क्रोध भी करते हैं और यह भी कहते हैं कि बाबा ने कहा है क्रोध नहीं करो। जैसे कहानी सुनाते हैं कि तोते को कहा - गंगाराम नलके पर नहीं बैठना और वह नलके पर बैठकर ही कह रहा है ''गंगाराम नलके पर नहीं बैठना''। ●